केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक		प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
Jitendra Ku[illegible] Lecturer Govt. Exc. School, JBP V71150001 Mob.-7000118938	ANJU JAIN. 9[illegible]422571 V71051091 V7162009[illegible]

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(1) का उत्तर -

सही विकल्प -

(अ) सुषुम्ना ।

(ब) रक्त स्त्राव को रोकना

(स) 18 वर्ष

(द) 9 दिन

(इ) फेफड़ा

(फ) दृष्टेन्द्रियाँ

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल अंक
6 + 6 = 12
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक -(२) का उत्तर -

रिक्त स्थानो की पूर्ती -

(अ) लीफ स्पाट।

(ब) 90%।

(स) वृषण।

(द) मधुमेह।

(इ) आम का पन्ना।

(फ) 118 से.मी.।

BSE

ONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYED

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक - (3) का उत्तर -

सत्य / असत्य -

(अ) असत्य ।

(ब) सत्य ।

(स) सत्य ।

(द) असत्य ।

(इ) असत्य ।

(फ) सत्य ।

BSE

17 + 5 = 22

पृष्ठ 6 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक-(5) का उत्तर -

सही जोड़ी -

(अ) बिलिरुबिन ।

(ब) 18 वर्ष ।

(स) संयोजी ऊतक ।

(द) नाड़ी संस्थान ।

(इ) 10 - 14 दिन ।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक-(5) का उत्तर -

एक वाक्य में उत्तर -

(अ) "वह तंत्र जो सोचने समझने किसी वस्तु को याद रखने के साथ-साथ विभिन्न रंगो के कार्यो में समंजस्य एवं सन्तुल स्थापित करता है और शरीर पर नियन्त्रण रखता है। तंत्रिका तंत्र कहलाता है।"

(ब) आचानक बिमार पड़ जाने पर तथा किसी व्यक्ति के साथ दुर्घटना हो जाने पर डॉक्टर के आने से पूर्व की तत्कालिन सहायता दी जाती है उसे प्राथमिक चिकित्सा कहते है।

(स) स्टेनले हॉल के अनुसार -"किशोरावस्था तुफान व तनाव की ~~आव~~ अवस्था है"

(द) ① हृदय ② रक्तवाहिनी - ① धमनी ② शिरा ③ केशिकाएँ।

(इ) श्वसन - "वायु की ऑक्सीजन द्वारा कार्बनिक भोजन का ऑक्सीकरण होने से जैविक ऊर्जा का उत्पन्न होना और कार्बन-डाई ऑक्साइड का निकलना श्वसन कहलाता है।

पृ० क्र० पृष्ठ के अंक कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक - (6) का उत्तर -

उत्तर किशोरवस्था की निम्न लिखित विशेषताएँ है -

(1) स्थिरता में वृध्दि :- किशोरवस्था में बालक - बालिकाओं को अनेक प्रकार के समस्याएँ होती रहती है। कहीं कोई काम नहीं आता में कोई भी चिल्ला देते है प्रत्येक आसामान्य सा महसुस होने लगता है। जिससे स्थिरता में वृध्दि लड़कियों के आपेक्षा लड़के बड़े होते है। या स्ते होते है।

(2) समस्याओं से जुझने कि विधियाँ :- किशोरवस्था में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ होनी लगती है। इस अवस्था समस्याएँ आती रहती है। कहीं माता - पिता ने कोई काम के लिए चिल्ला देते है तो कहीं बड़े दीदी - भैया और अनेक प्रकार की समस्या आती है। स्कूल का काम करना पड़ता है। कई बार दोस्तों के साथ झगड़ा हो जाता है। किशोरवस्था में इत्यादि समस्या होने लगती है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० - क्रमांक - (7) का उत्तर -

बालिका के जीवन में शिक्षा का महत्व :-

(1) शिक्षा जागृती उत्पन्न करती है। बालिका विभिन्न गतिविधियों को जानने लगती है। क्या अच्छा है क्या बुरा है इसका पहचान हो जाता है।

(2) शिक्षित लड़कियाँ अपना घर सम्भाल सकती है। दुसरो की मदद कर सकती है। विभिन्न कार्यो को आसानी से कर सकती है।

(3) अगर लड़कियाँ शिक्षित है तो आगे जाकर अपने बच्चों की पढ़ाई में मदद कर सकती है। उन्हे विभिन्न उपभोक्ताओं के बारे में ज्ञान होता है। और परिवार को सम्भाल सकती है।

YEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATI

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक -(8) का उत्तर -

परपोषित जीवाणु का अर्थ इस प्रकार है - ये जीवाणु अपना भोजन किसी दूसरे जीवित जीव से प्राप्त करते है उसे परपोषित जीव कहते है। ये दो प्रकार के होते है - ① विकल्पीक परपोषित ② अविकल्पीक परपोषी। ये किसी दूसरे जीव में अपना भोजन ढूंढते है।

प्र०-क्रमांक -(9) का उत्तर -

निषेचन :- ये निषेचन क्रिया में स्त्री वा पुरुष जब मैथुन प्रक्रिया करते है तो पुरुष स्त्री की योनी में वीर्य को छोड़ देता है। तो यह वीर्य स्त्री के गर्भाशय में जाकर अण्डाशयु का रूप ग्रहण करता है। फिर अण्डाशय शिशु के रूप में जन्म देता है। इस क्रिया को निषेचन कहलाता है।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCA

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक - (10) का उत्तर -

पीत बिन्दु :- नेत्र के दृष्टिपटल के तन्तु में शलाका या शंकु की संख्या अधिक पाया जाता है जिसे पीत बिन्दु कहलाती है।

B S E

प्र०-क्रमांक - (11) का उत्तर -

पुल्टिस के कार्य :-

① कहीं मोच आ गया है तो उसे इसकी सहायता से मोच कम हो जाता है।

② चोट लगने पर सुजन आ जाता है। उसे सेंक कर ठीक किया जा सकता है

③ इसकी मदद या प्रयोग से दर्द कम हो जाता है।

SECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(12) का उत्तर -

हैजा रोग के लक्षण -

① रोगी को सफेद माड़ के समान दस्त होने लगता है।
② प्यास अधिक लगती है पेशाब आना बंद हो जाता है।
③ शरीर में दर्द होता है।
④ बुखार भी रहता है।
⑤ शारीरिक कमजोरी महसुस होनी लगती है।

BSE

म.प्रदेश
EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक -(13) का उत्तर -

सेरीबेलम के कार्य :-

① सम्पूर्ण शरीर का सन्तुलन का कार्य करता है-:

ये सम्पूर्ण शरीर का सन्तुलन ठीक से नियन्त्रण होता है। इससे विशेष प्रकार से क्रिया जा सकता है।

(2) अभि इतना ज्ञान नहीं है कि यह सेरीबेलम का कार्य करता है। परन्तु शरीर के सन्तुलन बनाने का कार्य किया जा सकता है।

(3) सभी प्रकार के शरीर के अंगो का पर नियन्त्रण रखता है। और शरीर का कार्य आसान हो जाता है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक -(14) का उत्तर -

टायफाइड रोग के फैलने के कारण :-

(1) दूषित जल, भोजन आदि के सेवन करने से।
(2) बिना ढका हुआ भोजन, फल, सब्जीयां आदि के सेवन से।
(3) अनुचित आदतों - जैसे शौचालय जाने के बाद साबुन से हाथ नहीं धुलते हैं। तो यह रोग हो जाता है।
(4) दूषित, दूध बिना ढका भोजन खाने से है।

प्र०-क्रमांक -(15) का उत्तर -

केशिकाओं के कार्य :-

(1) गुर्दे में मूत्र को छान्ना जाता है।
(2) ऑक्सीजन और CO_2 का आदान-प्रदान करना।
(3) शरीर के विभिन्न अंगों में भोजन पहुंचाना।
(4) पचतंत्र से प्रटीन प्राप्त करना।

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDU

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक -(17) का उत्तर -

प्राथमिक चिकित्सा के गुण निम्नलिखित हैं -

① शरीर विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान होना :- प्राथमिक चिकित्सा को शरीर विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान होना चाहिए। जैसे नाड़ी संस्थान, श्वसन तंत्र, रक्त स्त्राव, रक्तचाप आदि। का प्रारम्भिक ज्ञान होना चाहिए।

② त्वरित निर्णय क्षमता :- कभी - कभी प्राथमिक चिकित्सक को व शरीर का त्वरित निरीक्षण कर लेना चाहिए। नहीं तो कभी - कभी पता नहीं चलता है कि वह चोट तो कहीं और लगा है और देख-भाल कोई और अंग पर करते हैं।

③ धैर्य :- प्राथमिक चिकित्सक को कभी भी धैर्य नहीं खोना चाहिए। कभी - कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति सहायता देना पर मदद नहीं करता है। और कभी - कभी घायल व्यक्ति की मदद नहीं करते लोग मजाक भी उड़ा लेते हैं।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(v) मृदुभाषी :- प्राथमिक चिकित्सक को कभी - भी कठोर बोली नहीं बोलना चाहिए । नहीं तो वह सहयोग करने में नहीं होते है। हमेशा प्राथमिक चिकित्सक को मृदु बोली बोलना चाहिए ।

BSE

प्र० क्रमांक-(19) का उत्तर -

रक्त के निम्न लिखित कार्य इस प्रकार है -

(1) श्वसन के लिए आवश्यक गैसो का परिवहन :- शरीर के अंगो मे रक्त के माध्यम से विभिन्न अंगो एवं फेफड़ो तक श्वसन पहुँचायाँ जाता है। और कार्बनडाई ऑक्साइड को इकट्ठा करके हृदय तक ~~लाने~~ लाया जाता है।

(2) भोज्य पदार्थ का परिवहन :- शरीर में विभिन्न क्रियाओं से भोजन शरीर तक पहुँचाया जा सकता है। इसका विभिन्न ऑतो से भोजन प्राप्त किया जा सकता है।

(17)

प्रश्न क्र.

(3) अपशिष्ट पदार्थ का त्याग या निष्कासन :- शरीर के सभी अनावश्यक पदार्थों को विभि विभिन्न क्रियाओं के द्वारा जैसे - कार्बनडाई ऑक्साइड को बाहर निकाला जाता है। इससे अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकाला जा सकता है।

(4) रक्षात्मक कार्य :- शरीर की रक्षा रक्त द्वारा सम्भव है क्योंकि रक्त हमारे शरीर को ऑक्सीजन प्राप्त करता है। और विभिन्न कार्य को करने में सहायता प्राप्त करता है। रक्त के द्वारा हमारा शरीर की रक्षा होता है।

प्र०-क्रमांक - (20) का उत्तर -

कर्ण की क्रिया-विधि :- कर्ण हमारे लिए अति आवश्यक होता है क्योंकि कान के कारण हम किसी भी बात को सुन सकते हैं अ्स और समझ सकते है। किसी भी कि आवाज को हम सुन सकते है और विभिन्न कार्य कर सकते है। इसी प्रकार अगर हम नही सुन पाते तो बहुत से कामों को या कार्यों के नही कर पाते।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

जिससे कान के तीन परतों से बिना है ① बाह्य कर्ण ② मध्य कर्ण और ③ अन्त कण ये तीनो पर से ही हमे सुनाई देता है। अगर किसी एक परत मगर खराब हो गया है तो हमे सुनाई नही देख देगा और विभिन्न कार्य करेन मै असमर्थ रह जायेंगे।

प्र० क्रमांक -(16) का उत्तर -

B
S
E

प्राणायाम के लाभ :-

① शरीर में फूर्ती मिलती है।
② दर्द कम हो जोते है।
③ विभिन्न कार्य करेन मे आसानी होती है।
④ बच्चों की शिक्षा मैं तेज हो जोते है।
⑤ शरीर को आराम मिलता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-क्रमांक - (18) का उत्तर :-

जीवाणुओं में अलैंगिक प्रजनन द्विविभाजन :-

चित्र - जीवाणुओं का द्विविभाजन ।

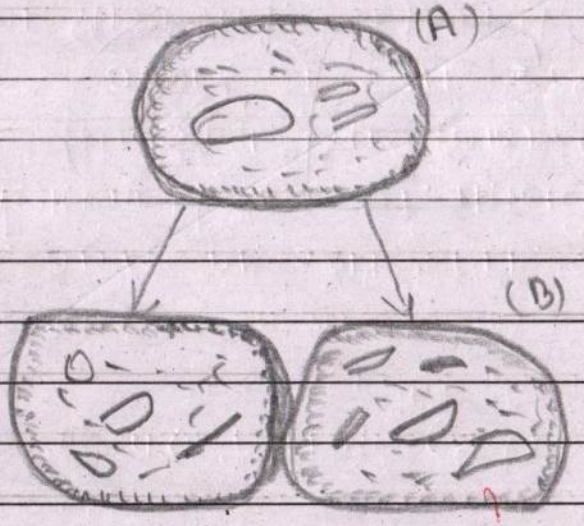

इस क्रिया में जीवाणु प्रजनन के माध्यम से अपना कार्य आसान कर लेता है। और जीवाणु धीरे-धीरे विभाजित होता है। सबसे पहले एक स्थिरता में होता है दूसरा में द्विविभाजन होती है और अनेक प्रकार के जीवाणु का विभाजन होता है।